United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय संस्कृतत में ज्ञान परंपरा

डॉ. शेख़ बेनज़ीर
हिन्दी प्राध्यापपका, हिन्दी पिभाग, एस.ी.सस.आर शासकीय मिापिद्यालय, पलमनेरू, चित्तूरु जिला, आत्र प्रदेश

बी शब्द : जीवन मूल्य, संयम, कल्याण, अनुशासन

सार :

भारतीय संस्कृतत में ज्ञान परंपरा का उद्देश्य केवल ववद्या प्राप्त करना नहk, बल्ल्क जीवन मूल्यों, संयम, अनुशासन और मानव कल्याण की स्थापना करना है। प्राचीन काल से वेद, उपतनषद, पुराण और स्मृततयाँ ज्ञान के प्रमुख स्रोत रहे, ल्जन्होंने धमम, दशमन, ववज्ञान, चचककत्सा, गणणत और नैततक जीवन का मागम ददखाया। गुरु-शशष्य परंपरा ने शशक्षा को आचरण, ववनम्रता और सेवा से जोडा। आयुवेद, योग, गणणत में शून्य की खोज और खगोल ववज्ञान में भारतीय ववद्वानों के योगदान ने ववश्व को नई ददशा दk। तक्षशशला और नालंदा जैसे ववश्वववद्यालय ज्ञान के वैल्श्वक केंद्र थे। भारतीय परंपरा में ज्ञान को आत्मज्ञान और मुल्तत का साधन माना गया—"तमसो मा ज्योततगममय" इसका प्रतीक है। कबीर, तुलसी और सूर जैसे संतों ने ज्ञान को भल्तत और नैततकता से जोडा। आज भी यह परंपरा संतुशलत जीवन, प्रकृतत सम्मान और "वसुधैव कुटुंबकम्" का संदेश देकर ववश्व को मागमदशमन देती है।

भारतीय संस्कृतत में ज्ञान परंपरा का अत्यंत महत्वपूणम स्थान रहा है। प्राचीन काल से हk भारत को "ज्ञान की भूशम" कहा जाता रहा है। यहाँ ज्ञान को केवल सूचना या ववद्या नहk, बल्ल्क आत्मबोध, नैततकता और जीवन के सहk मागम के रूप में देखा गया। भारतीय चचंतन में ज्ञान का उद्देश्य व्यल्तत, समाज और ववश्व के कल्याण से जुडा रहा है।

वैददक काल से हk ज्ञान परंपरा का ववकास हुआ। वेद, उपतनषद, पुराण और स्मृततयाँ भारतीय ज्ञान के प्रमुख स्रोत रहे हैं। इन ग्रंथों में धमम, दशमन, ववज्ञान, चचककत्सा, गणणत, खगोल,

संगीत और जीवन मूल्यों का ववस्तृत वणमन शमलता है। "सत्यं वद, धमं चर" जैसे उपदेश ज्ञान को आचरण से जोडते हैं।

गुरु-शशष्य परंपरा भारतीय ज्ञान परंपरा की ववशेष पहचान है। प्राचीन समय में ववद्याथी गुरुकुलों में रहकर शशक्षा ग्रहण करते थे। वहाँ केवल पुस्तकीय ज्ञान हk नहk, बल्ल्क अनुशासन, सेवा, ववनम्रता और नैततक जीवन का प्रशशक्षण भी ददया जाता था। गुरु को ज्ञान

का प्रकाश देने वाला माना गया—“गुरु ब्रह्मा, गुरु ववष्णु…” जैसी मान्यताएँ इसी सम्मान को दशामती हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा ववश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक मानी जाती है। यह केवल पुस्तकीय या बौद्चधक ज्ञान तक सीशमत नहk̇ रहk, बल्ल्क जीवन जीने की कला, नैततक मूल्यों, आध्याल्त्मकता और मानव कल्याण की समग्र दृल्ष्ट से जुडी रहk है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य के बाहरk और भीतरk दोनों प्रकार के ववकास को सुतनल्श्चत करना रहा है। यहk कारण है कक भारत को प्राचीन काल से हk “ववश्वगुरु” की उपाचध दk जाती रहk है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने ववश्व को अनेक अमूल्य देनें दk हैं। आयुवेद इसका एक प्रमुख उदाहरण है। आयुवेद केवल रोगों के उपचार की पद्धतत नहk̇, बल्ल्क स्वस्थ जीवन जीने का ववज्ञान है। इसमें शरkर, मन और आत्मा के संतुलन पर बल ददया गया है। चरक और सुश्रुत जैसे महान वैद्याचायों ने चचककत्सा ववज्ञान को व्यवल्स्थत रूप ददया। सुश्रुत संदहता में शल्य चचककत्सा (सजमरk) का जो वणमन शमलता है, वह अपने समय से बहुत आगे का ज्ञान था। आज भी ववश्व के अनेक देश आयुवेद को एक वैकल्ल्पक और प्रभावी चचककत्सा पद्धतत के रूप में स्वीकार कर रहे हैं।

योग भी भारतीय ज्ञान परंपरा की ववश्वप्रशसद्ध देन है। योग केवल व्यायाम नहk̇, बल्ल्क शरkर, मन और आत्मा को संतुशलत करने की एक समग्र पद्धतत है। पतंजशल के योगसूत्रों में योग के शसद्धांतों का ववस्तार से वणमन शमलता है। योग के माध्यम से व्यल्तत मानशसक शांतत, एकाग्रता, आत्मतनयंत्रण और स्वास््य प्राप्त कर सकता है। आज अंतरराष्रkय योग ददवस का मनाया जाना इस बात का प्रमाण है कक योग ने ववश्व स्तर पर अपनी उपयोचगता शसद्ध की है। लाखों लोग योग के माध्यम से स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

गणणत के क्षेत्र में भी भारत का योगदान अत्यंत महत्वपूणम रहा है। शून्य (0) की खोज भारतीय गणणतज्ञों की महान देन है। शून्य के बबना आधुतनक गणणत, ववज्ञान और तकनीक की कल्पना भी संभव नहk̇ है। दशमलव प्रणालk ने गणना को सरल और व्यवल्स्थत बनाया। आयमभट्ट और ब्रह्मगुप्त जैसे गणणतज्ञों ने बीजगणणत, ज्याशमतत और खगोल ववज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कायम ककए। आज पूरk दुतनया ल्जस गणणतीय प्रणालk का उपयोग करती है, उसकी जडें भारतीय ज्ञान परंपरा में हk शमलती हैं।

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

खगोल ववज्ञान में भी भारतीय ववद्वानों ने महत्वपूणम योगदान ददया। प्राचीन काल में हk भारतीय खगोलशाल्स्त्रयों ने ग्रहों की गतत, सूयम और चंद्र ग्रहण के कारणों तथा समय गणना के शसद्धांतों को समझ शलया था। आयमभट्ट ने पृवी के अपनी धुरk पर घूमने का ववचार प्रस्तुत ककया, जो उस समय एक क्ांततकारk सोच थी। इससे स्पष्ट होता है कक भारतीय ज्ञान परंपरा वैज्ञातनक दृल्ष्टकोण से भी समृद्ध रहk है।

भारतीय शशक्षा प्रणालk का स्वरूप भी अत्यंत ववशशष्ट था। तक्षशशला और नालंदा जैसे ववश्वववद्यालय ववश्व के सबसे प्राचीन शशक्षा केंद्रों में चगने जाते हैं। यहाँ भारत हk नहk, बल्ल्क चीन, कोररया, ततब्बत और अन्य देशों से भी ववद्याथी शशक्षा प्राप्त करने आते थे। इन ववश्ववववद्यालयों में दशमन, चचककत्सा, गणणत, राजनीतत, व्याकरण, धमम और कला जैसे अनेक ववषय पढाए जाते थे। शशक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहk, बल्ल्क ज्ञान और चररत्र तनमामण करना था।

भारतीय संस्कृतत में ज्ञान का संबंध केवल बुद्चध से नहk, बल्ल्क आत्मा और चररत्र से भी जोडा गया है। यहाँ ज्ञान को आत्मज्ञान का मागम माना गया। उपतनषदों में "तमसो मा ज्योततगममय" का संदेश शमलता है, ल्जसका अथम है—अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो। यह अज्ञान से ज्ञान की ओर बढने का प्रतीक है। ज्ञान को मुल्तत का साधन माना गया, जो मनुष्य को सत्य और धमम के मागम पर चलने की प्रेरणा देता है। सूरदास के पदों में भल्तत के साथ गहरा मनोवैज्ञातनक और आध्याल्त्मक ज्ञान है। उन्होंने मानव भावनाओं और प्रेम को ज्ञान से जोडा।

भारतीय ज्ञान परंपरा में गुरु का स्थान अत्यंत उच्च माना गया है। गुरु को वह माना गया जो अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाए। गुरु-शशष्य परंपरा में शशक्षा केवल ववषयों का अध्ययन नहk, बल्ल्क जीवन मूल्यों का शशक्षण भी था। शशष्य गुरु के आश्रम में रहकर अनुशासन, सेवा, संयम और ववनम्रता सीखते थे। इससे उनका सवांगीण ववकास होता था। कबीर के दोहे ज्ञान, आत्मबोध और सत्य की खोज पर आधाररत हैं। वे बाहरk आडंबर से हटकर सच्चे ज्ञान पर बल देते हैं। कबीर ने गुरु को ज्ञान का मागमदशमक बताया—गुरु के बबना सच्चे ज्ञान की प्राल्प्त कदिन है।

गुरु गोववंद दोऊ खडे, काके लागं पाय। बशलहारk गुरु आपने, गोववंद ददयो बताय।।

भारतीयों की यह ज्ञान परम्परा ववश्व में अपने पदचचन्ह अंककत कर चुकी है। आज पाश्चात्य संस्कृतत भारतीय संस्कृतत की स्तुतत करते हुए, प्रकृतत की ओर लौटने की बात करती है। ववशभन्न दाशमतनकों ने प्रकृतत के बीच शान्त वातावरण में ववद्याचथमयों के बौद्चधक ववकास को महत्त्वपूणम एवं उद्देश्यपूणम बताया है। बडे-बडे पाश्चात्य शशक्षाशास्त्री भारतीयों की इस प्रणालk का वैज्ञातनक रूप में समथमन करते हैं। उनका मानना है कक प्राकृततक वातावरण पूणमतः स्वच्छ और स्वस्थ होता है। उसका तनममल शान्त स्वरूप ववद्याथी को न केवल आध्याल्त्मक, मानशसक एवं बौद्चधक रूप से, बल्ल्क शारkररक रूप से भी स्वस्थ रखता है और स्वस्थ शरkर में हk स्वस्थ मल्स्तष्क का तनवास होता है। अतः आज ववश्व भारत की इस परम्परा का हृदय से स्वागत करता है और कहता है कक भारतीयों की परम्पराएँ वैज्ञातनक दल्ष्ट से पूणमतः प्रासंचगक हैं।

"पोथी पदढ पदढ जग मुआ, पंडडत भया न कोय, ढाई आखर प्रेम का, पढे सो पंडडत होय"
संत मलूकदास गुरु और ब्रह्म को एक समान मानते हैं। दोनों में कोई अंतर नहk है। वे गुरु को सवम शल्ततमान मानते हैं। गुरु ईश्वर की तरह सभी कायों को संपन्न करने में सक्षम हैं। गुरु इतने समथमवान हैं कक सूई के छेद में से सुमेरु पवमत को आरपार करा सकते हैं-
"हमारा सतगुरु बबरले जानै,
सुई के नाके सुमेर चलावै, सो यह रूप बखानै।"

ज्ञान के साथ ववनम्रता का संबंध भारतीय संस्कृतत की ववशेषता है। यहाँ माना गया कक सच्चा ज्ञानी वहk है जो अहंकार से दूर रहे। “ववद्या ददातत ववनयम्” अथामत ववद्या ववनम्रता देती है—यह उल्तत भारतीय दल्ष्टकोण को स्पष्ट करती है। ज्ञान का उद्देश्य दूसरों पर प्रभुत्व जमाना नहk, बल्ल्क समाज और मानवता की सेवा करना है। सदहष्णुता, सदाचार और करुणा जैसे गुण ज्ञान के साथ आवश्यक माने गए। रामचररतमानस में धमम, नीतत, कतमव्य और आदशम जीवन का ज्ञान है। तुलसीदास ने भल्तत के साथ-साथ जीवन-दशमन ददया। तुलसीदास के अनुसार भल्तत से ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से मोक्ष का मागम खुलता है। उनका सादहत्य समाज के कल्याण और नैततक जीवन की शशक्षा देता है। ज्ञान का उद्देश्य समाज की भलाई है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने वववविधता में एकता का संदेश भी ददया। यहाँ ववशभन्न मतों, दशमन और ववचारधाराओं को स्थान शमला। बौद्ध, जैन, वैददक और भल्तत परंपराएँ एक हk सांस्कृततक धरातल पर ववकशसत हुईं। इससे ववचारों का आदान-प्रदान हुआ और ज्ञान का दायरा ववस्तृत हुआ। यह उदार दल्ष्टकोण भारतीय संस्कृतत की पहचान रहा है।
दहंदk सादहत्य भारतीय ज्ञान परंपरा का जीवंत रूप है। इसमें

- आत्मज्ञान
- नैततक शशक्षा
- सामाल्जक समझ
- आध्याल्त्मक दल्ष्ट
- प्रेम और मानवता सबका समावेश है।

आधुतनक युग में भी भारतीय ज्ञान परंपरा प्रासंचगक है। आज जब दुतनया मानशसक तनाव, पयामवरण संकट और नैततक चुनौततयों से जूझ रहk है, तब भारतीय ववचारधारा संतुशलत जीवन, प्रकृतत के प्रतत सम्मान और मानवीय मूल्यों का मागम

ददखाती है। "वसुधैव कुटुंबकम्" का शसद्धांत पूरk पृवी को एक पररवार मानने की प्रेरणा देता है, जो आज के वैल्श्वक समाज के शलए अत्यंत उपयोगी है।

तनष्कषमतः भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहk, बल्ल्क वतममान और भववष्य के शलए भी मागमदशमक है। इस परंपरा ने ववश्व को चचककत्सा, योग, गणणत, दशमन और शशक्षा के क्षेत्र में अमूल्य योगदान ददए हैं। साथ हk यह शसखाती है कक ज्ञान का वास्तववक उद्देश्य मानवता का कल्याण, नैततक जीवन और आल्त्मक उन्नतत है। यदद हम इस परंपरा के मूल्यों को अपनाएँ, तो एक संतुशलत, शांततपूणम और समृद्ध समाज का तनमामण संभव है।

संदभम ग्रन्थ :

हजारk प्रसाद द्ववेदk , कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई वदल्लk, 2018.
वैददक सादहत्य और संस्कृतत, ववश्वववद्यालय प्रकाशन.
योगेन्द्र प्रसाद—संत परम्परा, लोकभारती प्रकाशन, 2019.
सं. डॉ. नगेंद्र दहंदk सादहत्य का इततहास, मयूर पेपर बैतस, 2016